अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञानकोश

रामनारायण यादवेंदु

1943

Exported from Wikisource on 9 मई 2024

अग्रगामी दल—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के त्रिपुरी-अधिवेशन (मार्च सन् १९३९) के बाद जब कांग्रेसी नेताओं के नीति-संबंधी आंतरिक झगड़ों के कारण कांग्रेस के राष्ट्रपति श्री सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रपतित्व से त्याग-पत्र देदिया तब उन्होने ३ मई १९३९ को कांग्रेस के अन्तर्गत अग्रगामी दल बनाने की घोषणा की। अपने कलकत्ते के भाषण में उन्होने कहा कि इस दल का उद्देश्य उन लोगों को एकत्र करना है जो कांग्रेस की समझौतावाली नरम नीति एव साम्राज्यवाद के विरोधी हैं। "यह दल कांग्रेस का अंग रहेगा, उसके वर्तमान विधान, लक्ष्य, नीति और कार्यक्रम की मानेगा, महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का सम्मान करेगा और उनके अंहिसात्मक असहयोग के राजनीतिक सिद्धात मे पूर्ण विश्वास रखेगा।" जून १९३९ के अन्तिम सप्ताह मे अग्रगामी दल का प्रथम सम्मेलन हुआ और उसमे उसका कार्यक्रम निर्धारित किया गया। उसका मुख्य कार्यक्रम इस प्रकार रखा गया—(१) कांग्रेस को स्थिर स्वार्थवाले पूँजीवादियों से बचाना। (२) ऐसा कार्य करना जिससे कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलों का कांग्रेस पर प्रभुत्व स्थापित न होने पावे। (३) कांग्रेस को जनतावादी तथा उग्रवादी बनाया जाय। (४) किसान-मजदूर आन्दोलन को मदद दी जाय। (५) कांग्रेस तथा अन्य साम्राज्य-विरोधिनी संस्थाओं मे एकता स्थापित करना। (६) अखिल भारतीय स्वयंसेवक-दल बनाना। (७) देशी रियासती जनता के आन्दोलनों में उसकी सहायता करना। (८) संघ-शासन का बगैर समझौता किए विरोध करना। (९) साम्राज्यवादी महायुद्ध मे भारतवर्ष को शामिल न होने देने का प्रचार करना। (१०) विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करना। (११) आज़ादी की लड़ाई को शीघ्र ही आरम्भ करने की तैयारी करना।

अपने जन्म-काल से इस दल ने कांग्रेस के भीतर उपर्युक्त कार्यक्रम को सामने रखकर कार्य किया और आज भी उसका अस्तित्व है। परन्तु कांग्रेस के अधिकारियों ने सदैव इस दल को अनावश्यक बतलाया और इसकी भरसक निंदा भी की।

समस्त प्रांतो में प्रांतिक तथा ज़िला अग्रगामी दल बन गये। रामगढ कांग्रेस-अधिवेशन के साथ समझौता-विरोधी सम्मेलन भी सुभाष बाबू के सभापतित्व में हुआ। कांग्रेस की उच्चसत्ता निरन्तर सुभाष बाबू का विरोध करती रही। इसने कटुता का रूप धारण कर लिया। १९४१ के जनवरी महीने मे सुभाष बाबू भारत से कहीं बाहर चले गये। उनके बाद भारतीय सिविल सर्विस के भूतपूर्व सदस्य और सुभाष बाबू के अनन्य सहकारी श्री विष्णु हरि कामथ इस दल के प्रधान संचालक रहे और उनके साथ श्रीमुकुन्दलाल सरकार प्रधान कार्यकर्त्ता रहे है। इस दल के सदस्यों ने कलकत्ते के कालकोठरी के स्मारक—हालवैल मानूमेंट—के उखड़वाने के लिए सन् १९४० मे सत्याग्रह किया और इसमें उन्हें सफलता मिली। बंगाल-सरकार ने इस स्मारक को नष्ट कर दिया और श्री सुभाष बोस के सिवा सब सत्याग्रही बन्दियो को भी रिहा कर दिया। सन् १९४२ के जून मास में सरकार ने अग्रगामी दल को ग़ैरक़ानूनी घोषित कर दिया और इसका दमन किया।

About this digital edition

This e-book comes from the online library Wikisource[1]. This multilingual digital library, built by volunteers, is committed to developing a free accessible collection of publications of every kind: novels, poems, magazines, letters...

We distribute our books for free, starting from works not copyrighted or published under a free license. You are free to use our e-books for any purpose (including commercial exploitation), under the terms of the Creative Commons Attribution-ShareAlike 3.0 Unported[2] license or, at your choice, those of the GNU FDL[3].

Wikisource is constantly looking for new members. During the realization of this book, it's possible that we made some errors. You can report them at this page[4].

The following users contributed to this book:

- JhsBot
- Mahima mayuri kaushik
- रोहित साव27
- अनिरुद्ध कुमार
- Phe

- AkBot
- Jon Harald Søby
- निधिलता तिवारी
- Sahilrathod
- Suraj.p
- ज्हाझक्हाक्रुब्हो
- नीलम
- छुईमुई

---

1. ↑ https://wikisource.org
2. ↑ https://www.creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0
3. ↑ https://www.gnu.org/copyleft/fdl.html
4. ↑ https://wikisource.org/wiki/Wikisource:Scriptorium